

NEXT IAS

दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

भारत में प्राथमिक खाद्य उपभोग का समानिकरण

www.nextias.com

भारत में प्राथमिक खाद्य उपभोग का समानिकरण

संदर्भ

- भारत की खाद्य संकट से आत्मनिर्भरता तक की यात्रा उल्लेखनीय रही है; फिर भी, करोड़ों लोग अब भी भूख का सामना करते हैं और उससे अधिक लोग अपर्याप्त पोषण से पीड़ित हैं।

भारत में प्राथमिक खाद्य उपभोग के बारे में

- राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (NSS) कार्यालय द्वारा किए गए घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (HCES) 2023-24 के अनुसार:
 - ग्रामीण परिवारों ने खाद्य वस्तुओं पर 47.04% व्यय किया, जबकि शहरी परिवारों ने 39.68% व्यय किया।
 - गैर-खाद्य व्यय ग्रामीण क्षेत्रों में 52.96% और शहरी क्षेत्रों में 60.32% रहा।
- विश्व बैंक की 'पावर्टी एंड इक्विटी ब्रीफ: इंडिया', 2025 के अनुसार, अत्यधिक गरीबी (प्रति दिन \$2.15 से कम पर जीवन) 2011-12 में 16.2% से घटकर 2022-23 में 2.3% रह गई।

भारत में उपभोग आधारित प्रमुख गरीबी समितियाँ

- **अलाघ समिति (1979):** ग्रामीण और शहरी भारत के लिए गरीबी रेखा को परिभाषित करने का प्रथम आधिकारिक प्रयास।
 - न्यूनतम कैलोरी सेवन पर आधारित — ग्रामीण के लिए 2,400 किलो कैलोरी/दिन और शहरी के लिए 2,100 किलो कैलोरी/दिन।
- **लक्षदवाला समिति (1993):** NSSO सर्वेक्षणों से उपभोग व्यय डेटा का उपयोग किया।
- **तेंदुलकर समिति (2005–2009):** कैलोरी मानकों से हटकर व्यापक उपभोग टोकरी अपनाई।
 - स्वास्थ्य और शिक्षा को गरीबी आकलन में शामिल किया।
 - डेटा संग्रह के लिए मिक्स्ड रेफरेंस पीरियड (MRP) का उपयोग किया।
- **रंगराजन समिति (2012–2014):** तेंदुलकर पद्धति की आलोचना के बीच गरीबी मापन का पुनर्मूल्यांकन।
 - **गरीबी सीमा में वृद्धि:** शहरी के लिए ₹32/दिन और ग्रामीण के लिए ₹27/दिन (2014 मूल्य)।
 - खाद्य, वस्त्र, किराया, परिवहन, शिक्षा और स्वास्थ्य को पावर्टी बास्केट में शामिल किया।
 - नीति लक्ष्यों के लिए जनसंख्या के निचले 30% को ट्रैक करने का सुझाव दिया।

कैलोरी से आगे: 'थाली भोजन' दृष्टिकोण

- **परंपरागत विधि:** भारत में गरीबी का आकलन ऐतिहासिक रूप से न्यूनतम कैलोरी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आवश्यक आय के आधार पर किया गया है।
 - यह पोषण और खाद्य संतुष्टि के व्यापक पहलुओं को नहीं दर्शाता, यद्यपि यह शारीरिक दृष्टिकोण उपयोगी है।
- **थाली एक मीट्रिक के रूप में:** चावल, दाल, सब्जियाँ, रोटी, दही और सलाद से बनी थाली दक्षिण एशिया में संतुलित और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक खाद्य उपभोग इकाई का प्रतिनिधित्व करती है।
 - CRISIL के ₹30 प्रति घर-निर्मित थाली के अनुमान का उपयोग करते हुए, शोधकर्ताओं ने वास्तविक खाद्य व्यय डेटा के आधार पर वहन क्षमता का आकलन किया।

• निष्कर्ष (2023–24):

- 50% ग्रामीण और 20% शहरी परिवार दो थाली प्रतिदिन वहन नहीं कर सके।
- सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) की आपूर्ति को ध्यान में रखने के पश्चात भी वंचना अधिक रही: ग्रामीण क्षेत्रों में 40% और शहरी क्षेत्रों में 10%।
- यह संकेत देता है कि खाद्य वंचना विश्व बैंक की गरीबी आंकड़ों की तुलना में कहीं अधिक स्तर पर बनी हुई है।

संबंधित चिंताएँ और मुद्दे

- **PDS प्रभावशीलता:** अनाज केवल लगभग 10% घरेलू व्यय का हिस्सा हैं, जिससे व्यापक पोषण घाटे से निपटने में प्रणाली की प्रभावशीलता सीमित हो जाती है।
- **सब्सिडी वितरण:** ग्रामीण भारत में, व्यय क्षमता तिगुनी होने के बावजूद, शीर्ष 10% को अभी भी निचले 5% के बराबर ही सब्सिडी मिलती है।
 - शहरी भारत में, सब्सिडी व्यवस्था अधिक प्रगतिशील है, फिर भी लगभग 80% परिवार लाभान्वित होते हैं, जिनमें वे भी शामिल हैं जो बुनियादी पोषण आवश्यकताओं से कहीं ऊपर हैं।
- **असमान प्रोटीन उपभोग:** दालों का उपभोग, जो कई भारतीयों के लिए मुख्य प्रोटीन स्रोत हैं, अत्यधिक असमान है।
 - सबसे गरीब लोग सबसे अमीरों की तुलना में आधी दालें ही उपभोग करते हैं।

प्रयास और पहले

- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS):** यह सब्सिडी वाले अनाज एवं मुफ्त भोजन प्रदान करती है, और आय समूहों के बीच अनाज उपभोग को समान करती है।
 - सबसे अमीर भी लगभग उतना ही चावल और गेहूँ उपभोग करते हैं जितना सबसे गरीब।
- **शहरी गरीबी उन्मूलन (2024 पायलट मिशन):** यह DAY-NULM की सफलता पर आधारित है, जिसने 1 करोड़ से अधिक शहरी गरीब परिवारों को स्वयं सहायता समूहों में संगठित किया, जिसमें 90% महिलाएँ शामिल थीं।
 - यह पाँच घटकों के साथ शहरी गरीबी को लक्षित करता है:
 - समुदाय-आधारित संस्थागत विकास
 - वित्तीय समावेशन और उद्यम विकास
 - सामाजिक अवसंरचना
 - अन्य मंत्रालयों के साथ समन्वय
 - कमजोर समूहों के लिए नवाचार परियोजनाएँ (जैसे गिग वर्कर्स, घरेलू कामगार)
- **समग्र पोषण रिपोर्ट:** महिलाओं और बच्चों में एनीमिया से लड़ने के लिए आयरन सेवन में सुधार और स्रोतों का विविधीकरण आवश्यक है।

प्राथमिक खाद्य उपभोग को समर्थन देने वाले अन्य प्रयास

- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (NFSA):** ग्रामीण आबादी के 75% और शहरी जनसंख्या के 50% को सब्सिडी वाले खाद्यान्न का कानूनी अधिकार देता है।
 - 81 करोड़ लाभार्थियों को कवर करता है, जिनमें 16 करोड़ महिलाएँ शामिल हैं, अंतर्गत:

- प्राथमिकता परिवार (PHH)
- अंत्योदय अन्न योजना (AAY)
- **प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY):** COVID-19 के दौरान गरीबों को मुफ्त खाद्यान्न प्रदान करने के लिए शुरू की गई।
 - ♦ जनवरी 2024 से पाँच वर्षों के लिए विस्तारित।
 - ♦ 81.35 करोड़ लोगों को लाभ देता है, जिससे आर्थिक संकट के दौरान खाद्य पहुँच सुनिश्चित होती है।
- **PM पोषण (पूर्व में मध्याह्न भोजन योजना):** स्कूल बच्चों में पोषण सुधार को लक्षित करता है।
 - ♦ सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों को कवर करता है।
 - ♦ नियमित स्कूल उपस्थिति और बेहतर सीखने के परिणामों को बढ़ावा देता है।
- **फोर्टिफाइड चावल वितरण:** आवश्यक विटामिन और खनिजों से युक्त चावल को बढ़ावा देता है।
 - ♦ 2019-20 से PDS के माध्यम से 406 लाख मीट्रिक टन से अधिक वितरित।
 - ♦ छिपी हुई भूख और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से लड़ने का लक्ष्य।

नीतिगत सिफारिशें

- **PDS सब्सिडी का पुनर्गठन करें:** सबसे गरीब परिवारों के लिए समर्थन बढ़ाएँ।
 - ♦ उन परिवारों के लिए सब्सिडी समाप्त करें जो पहले से ही प्रतिदिन दो थाली से अधिक उपभोग कर रहे हैं।
- **संसाधनों का पुनः आवंटन करें:** अत्यधिक अनाज अधिकारों को तर्कसंगत बनाएं।
 - ♦ बचत को दालों की सब्सिडी की ओर पुनर्निर्देशित करें।
- **PDS को संक्षिप्त और प्रभावी बनाएं:** संसाधनों को कमजोर करने वाली व्यापक कवरेज से बचें।
 - ♦ प्राथमिक खाद्य उपभोग को जनसंख्या में समान करने के लिए लक्षित समर्थन प्रदान करें।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: पोषण संबंधी समानता, क्षेत्रीय असमानताओं और सरकारी नीतिगत हस्तक्षेपों के संदर्भ में भारत में प्राथमिक खाद्य उपभोग को समान बनाने के महत्व पर चर्चा करें।